जनजातीय समाज एवं राजनीतिक सहभागिताः एक अध्ययन

डॉ0 सुनीता बघेल
गेस्ट फैकल्टी
राजनीति शास्त्र विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज

सारांश

व्यक्ति के राजनीतिक समाजीकरण और सहभागिता में अभिवृत्ति और मूल्यों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती हैं। मानवीय व्यवहार बाह्य परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति की यांत्रिक प्रतिक्रिया मात्र नही है, बल्कि यह व्यवहार उसके विषिष्ट सामाजिक–साकृतिक परिवेष के प्रभाव से प्रभावित और नियन्त्रित भी है। राजनीतिक जीवन में व्यक्ति की रूचि और सहभागिता राजनीतिक संस्कृति में व्याप्त मूल्यों और मान्यताओं से अत्यधिक मात्रा में प्रभावित तथा निर्देषित होती हैं। व्यक्ति विभिन्न राजनीतिक मूल्यों, आदर्षो और मान्यताओं को अपने व्यक्त्वि में आत्मसात करता है तथा उनके अनुरूप उसकी राजनीतिक अभिवृत्ति और व्यवहार का स्वरूप निर्धारित होता है।

मुख्य शब्दः पंचायत राज, जनजातीय समाज एवं राजनीतिक सहभागिता।

व्यक्ति के राजनीतिक समाजीकरण और सहभागिता में अभिवृत्ति और मूल्यों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती हैं। मानवीय व्यवहार बाह्य परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति की यांत्रिक प्रतिक्रिया मात्र नही है, बल्कि यह व्यवहार उसके विषिष्ट सामाजिक–साकृतिक परिवेष के प्रभाव से प्रभावित और नियन्त्रित भी है। राजनीतिक जीवन में व्यक्ति की रूचि और सहभागिता राजनीतिक संस्कृति में व्याप्त मूल्यों और मान्यताओं से अत्यधिक मात्रा में प्रभावित तथा निर्देषित होती हैं। व्यक्ति विभिन्न राजनीतिक मूल्यों, आदर्षो और मान्यताओं को अपने व्यक्त्वि में आत्मसात करता है तथा उनके अनुरूप उसकी राजनीतिक अभिवृत्ति और व्यवहार का स्वरूप निर्धारित होता है।

राजनीतिक मूल्य एक ऐसे सामाजिक मानक है जो व्यक्ति के व्यवहार, रूचियों, विचारों एवं अन्तःक्रिया को परिभाषित करते है मूल्यों के द्वारा स्वीकृत या अस्वीकृत व्यवहारों की व्याख्या होती हैं। मूल्यों का अन्तरीकरण समाजीकरण के माध्यम से होता है इनके द्वारा व्यक्ति कार्य या व्यवहार को अपनाने की ओर प्ररित होता है जो इस विष्वास को प्रतिबिम्बित करते है की कोई स्थिति, दषा या वस्तु की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक वरीयता प्रदान करने के योग्य बनता हैं।

राजनीतिक व्यवस्था से सम्बन्धित मूल्यों एवं अभिवृत्तियों का विकास और स्थापना विभिन्न अभिकरणों के अन्तःक्रिया के माध्यम से होता है। सामान्यतः परिवार, शिक्षण संस्थायें, पड़ोस, ऐच्छिक संस्थायें, सूचना सम्प्रेषण के साधन, सरकार के दबाव समूह और राजनीतिक दल व्यक्ति के राजनीतिक समाजीकरण में प्रभावी भूमिका निभाते हैं। इन्हीं से व्यक्ति के राजनीतिक जगत् के बारे प्रारम्भिक प्रषिक्षण होता है जो जीवन पर्यन्त परिवर्तित होता रहता हैं।

प्रस्तुत अध्ययन जनजातीय समाज में राजनीतिक अभिरूचि, चेतना, एवं मूल्यों के बदलते स्वरूप पर केन्द्रति किया। यह समझने का प्रयास किया गया कि किस प्रकार वर्तमान भारतीय राजनीतिक संस्कृति में प्रचलित मूल्य और मान्यताओं का जनजातीय समाज के लोगों पर प्रभाव पड़ रहा है। तथा उनका व्यक्तित्व और व्यवहार किस मात्रा में नवीन राजनीतिक मूल्यों जैसे–स्वतन्त्रता, समानता, सत्ता अनुषासन, नियमबद्धता, समूहबद्धता इत्यादि से प्रभावित हो रहा हैं।

जनजातीय समाज में राजनीतिक समाजीकरण से संबंधित उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का विवेचन किया गया हैं साथ ही तुलना के लिये गैर–जनजातीय समाज से प्राप्त तथ्यों को भी साथ ही विवेचित किया गया हैं।

राजनीतिक सहभागिता

व्यक्ति राजनीतिक जीवन में भिन्न–भिन्न प्रकार से विभिन्न स्तर की सावेगिक मनोवृत्ति और राजनीतिक स्तरों में भाग लेता है। परम्परागत जनतंत्रात्मक सिद्धान्त के अनुसार राजनीतिक क्रियाकलापों में व्यक्ति की सहभागिता एक स्वतंत्र मूल्य है। सहभागिता को नागरिक उत्तरदायित्व, राजनीतिक स्वास्थ्य का चिह्न, वैयक्तिक हितों और स्वार्थों के पूर्ति का सर्वोत्तम माध्यम तथा जनवादी समाज की अन्तरात्मा माना गया है। जनवादी राजनीतिक व्यवस्था में नागरिक की राजनीतिक सहभागिता व्यवस्था के प्रभावशीलता की एक आवश्यक शर्त राजनीतिक सहभागिता है। मतदान प्रणाली, ऐच्छिक संस्थाओं तथा अन्य राजनीतिक संस्थाओं की सदस्यता या सहभागिता के द्वारा सामूहिक स्तर पर राजनीतिक व्यवस्था को शक्तिशाली बनाने में सहयोग प्राप्त होता है। माइकेल रश और फिलिप अल्थाफ ने राजनीतिक सहभागिता को राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न स्तरों में व्यक्ति की भागीदारी माना है।

राजनीतिक सहभागिता की अवधारणा प्रारम्भ में अत्यन्त संकुचित अर्थों में प्रयुक्त की गई है। इसके अन्तर्गत चुनाव काल में प्रचार और राजनीतिक क्रिया–कलापों जैसे राजनीतिक समस्याओं के सम्बन्ध में विचार–विमर्श, दूसरे व्यक्ति को वोट प्रदान करने की प्रेरणा, राजनीतिक प्रचार सामग्री का वितरण, राजनीतिक सभा में सहभागिता, राजनीतिक दल या चुनाव के लिए धन संग्रह तथा इसी प्रकार की अन्य क्रियाओं को सम्मिलित किया गया है। परन्तु बाद में राजनीतिक सहभागिता के अन्तर्गत ऐसे सभी व्यवहारों को सम्मिलित किया है। जिनके द्वारा व्यक्ति अपने राजनीतिक विचारों को प्रत्यक्ष रूप से

अभिव्यक्त करता है जिसके अन्तर्गत मतदान और राजनीतिक विचार–विमर्श जैसी परम्परागत प्रक्रियाओं और प्रदर्शन, धरना आदि परम्परागत क्रियाकलापों को भी सम्मिलित किया गया है।

आधुनिक जनवादी समाजों में राजनीतिक सहभागिता का स्तर अत्यधिक विस्तृत होता है, क्योंकि आधुनिक समाज सहभागिता के प्रोत्साहन का अनुमोदन करते हुए उसे स्वतन्त्र रूप से विकसित होने का अवसर प्रदान करता है। यही कारण है कि जनवादी समाजों में विभिन्न वर्ग, जाति, प्रजाति, सम्प्रदाय के सामाजिक–आर्थिक स्तर, राजनीतिक प्रभाव समूह , स्वार्थ समूह के राजनीतिक सहभागिता, मतदान व्यवहार और राजनीतिक व्यवहार का स्वरूप और स्तर भी भिन्न–भिन्न होता है।

73वें संवैधानिक संषोधन के अन्तर्गत, पंचायत व्यवस्था के माध्यम से षासन के वास्तविक अधिकार ,सीधे जनता को सौंप दिये गये हैं ताकि वह अपने सामुदायिक हितों एवं व्यक्तिगत लाभों से जुड़े निर्णयों में प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी कर सके। इस पृष्ठभूमि में उत्तरदाताओं से पंचायत एवं ग्राम सभा के सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त की गई। सारणी क्रमांक 1 मे उत्तरदाताओं की ग्राम सभा के बारे में जानकारी को वर्गीकृत किया गया है।

सारणी क्रमांक 1

ग्राम सभा के बारे में जानकारी

क्र सं.	ग्राम सभा के बारे में जानकारी	जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)	गैर जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)
1	हाँ	177 (81.7)	44 (73.3)
2	नहीं	33 (18.3)	16 (26.7)
	कुल	180 (100)	60 (100)

सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि 81.7 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता को ग्राम सभा के बारे जानकारी हैं जबकि 73.3 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता ग्राम सभा के बारे जानते हैं। अतः स्पष्ट है कि जनजातीय उत्तरदाता को गैर–जनजातीय उत्तरदाता की अपेक्षा ग्रामसभा के बारे मे अधिक जानकारी है।

ग्राम सभा की बैठक

ग्राम सभा की बैठकों के बारे में सूचना के संदर्भ में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी। प्राप्त तथ्यों को सारणी क्रमांक 2 में प्रदर्षित किया गया।

सारणी क्रमांक 2

ग्राम सभा के बैठकों की सूचना

क्र सं.	ग्राम सभा की बैठकों की सूचना	जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)	गैर जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)
1	हॉ	94 (52.2)	43 (71.7)
2	नही	86 (47.8)	17 (28.3)
	कुल	180 (100)	60 (100)
यदि हॉ तो बैठकों में नियमित भाग लेते है?			
1	हॉ	78 (82.9)	30 (69.7)
2	नही	16 (17.0)	13 (30.2)
	कुल	94 (100)	43 (100)

सारणी क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि 52.2 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाताओं को ग्राम सभा के बैठकों की सूचना मिलती है। 82.9 प्रतिषत जनजातीय उत्तरदाता नियमित ग्राम सभा की बैठकों में भाग लेते हैं, तथा 17.0 प्रतिषत जनजातीय उत्तरदाता को सूचना मिलने के बाद भी नियमित ग्राम सभा की बैठक में भाग नहीं लेते हैं। वहीं 71.7 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता को ग्राम सभा के बैठकों की सूचना मिलती है। 69.7 प्रतिषत गैर–जनजातीय उत्तरदाता नियमित ग्राम सभा की बैठकों में भाग लेते है, तथा 30.2 प्रतिषत गैर–जनजातीय उत्तरदाता को सूचना मिलने के बाद भी नियमित ग्राम सभा की बैठक में भाग नहीं लेते हैं। स्पष्ट है कि लगभग आधे जनजातीय उत्तरदाताओं को ग्राम सभा की बैठक की नियमित सूचना मिलती हैं और उसमें अधिकांष उत्तरदाता ग्राम सभा कि बैठक में नियमित भाग लेते हैं। जनजातीय उत्तरदाताओं के मुकाबले ग्राम सभा कि बैठक कि सूचना गैर–जनजातीय सदस्यों को अधिक मिलती हैं लेकिन उनकी सहभागिता की स्थिति जनजातीय सदस्यों के मुकाबले कम है।

नियमित भाग नहीं लेने के कारण

जनजातीय क्षेत्रों में ग्राम सभा की बैठकों में नियमित भाग नही ले पाने के कारणों के बारे मे उत्तरदाताओ से पूछा गया जिसे सारणी क्रमांक 3 में प्रदर्षित किया गया है।

सारणी क्रमांक 3

नियमित भाग नहीं लेने के कारण

क्र सं.	नियमित भाग नहीं लेने के कारण	जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)	गैर जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)
1	खेती/कार्यो में व्यस्तता	35 (19.4)	6 (10.0)
2	सूचना का अभाव	103 (57.2)	34 (56.7)
3	जानबूझकर नहीं जाते हैं	8 (4.4)	6 (10.0)
4	जाने से कोई लाभ नहीं	17 (9.4)	9 (15.0)
5	कोई आपकी बात नही सुनता	17 (9.4)	5 (8.3)
	कुल	180 (100)	60 (100)

सारणी क्रमांक 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि 19.4 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता खेती/मजदूरी अथवा अन्य गृहकार्यों की व्यस्तता के कारण ग्राम सभा की बैठकों में नियमित भाग नहीं ले पाते हैं, 57.2 प्रतिशत का मानना है कि बैठक के आयोजन की नियमित सूचना न मिल पाने के कारण ग्राम सभा कि बैठकों में भाग नहीं ले पाते हैं, 4.4 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता ऐसे भी है जिनका कहना है कि वे जानबूझकर बैठक में नहीं जाते हैं, 9.4 प्रतिशत का मानना है कि ग्राम सभा कि बैठकों में जाने से कोई लाभ नहीं है। इसलिए वे नियमित भाग नहीं लेते हैं एवं इतने ही प्रतिषत का मानना है कि उनकी बात कोई नही सुनता इसलिए वे नियमित ग्राम सभा की बैठकों में नहीं जाते हैं जबकि 10.0 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता खेती/मजदूरी अथवा अन्य गृहकार्यों की व्यस्तता के कारण ग्राम सभा कि बैठकों में नियमित भाग नही ले पाते हैं, 56.7 प्रतिशत का मानना है कि बैठक के आयोजन की नियमित सूचना न मिल पाने के कारण ग्राम सभा कि बैठकों में भाग नहीं ले पाते हैं, 10.0 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता ऐसे भी है जिनका कहना है कि वे जानबूझकर बैठक में नहीं जाते हैं, 15.0 प्रतिशत का मानना है कि ग्राम सभा कि बैठकों में जाने से कोई लाभ नहीं है। इसलिए वे नियमित भाग नहीं लेते हैं। 8.3 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं का मानना है कि उनकी बात कोई नहीं मानते इसलिए वे नियमित ग्राम सभा की बैठकों में नहीं जाते हैं।

स्पष्ट है कि सर्वाधिक जनजातीय उत्तरदाताओ का मानना है कि सूचना के अभाव के कारण नियमित ग्राम सभा की बैठक में भाग नही लेते हैं जबकि गैर–जनजातीय उत्तरदाता का मानना है कि सूचना के अभाव एवं जाने से कोई लाभ नही है, खेती कार्यो में व्यस्तता के कारण ग्रामसभा कि बैठकों में नियमित भाग नही ले पाते हैं।

जनजातीय समाज के लोगों का राजनीतिक सहभागिता, और सक्रियता से सम्बंधित तथ्यों का विष्लेषण किया गया है। अध्ययन में सम्मिलित जनजातीय उत्तरदाताओं में आधे से अधिक परिवार के सदस्यों और दोस्तों के साथ राजनीतिक मुद्दों पर हमेषा चर्चा करते हैं। एक तिहाई उत्तरदाता ऐसे हैं

जो राजनीतिक मुद्दों पर कभी–कभार चर्चा करते हैं। राजनीतिक चर्चा के संदर्भ में जनजातीय की स्थिति गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं के समान ही हैं।

जनजातीय उत्तरदाता किसी न किसी संगठन के सदस्य हैं। इनमें कला संगीत या शैक्षणिक संगठन, खेलकूद या मनोरंजन संबंधी संगठन, मजदूर संगठन, राजनीतिक पार्टी एवं धार्मिक संगठन प्रमुख है। कहा जा सकता है कि जनजातीय सदस्यों के विभिन्न संगठनों के माध्यम से सामुदायिक सहभागिता कि स्थिति अच्छी हैं।

विभिन्न राजनीतिक नेतृत्व जानकारी के संदर्भ में जनजातीय उत्तरदाताओं को प्रदेष के मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, स्थानीय विधायक आदि के बारे में जानकारी हैं। इस जानकारी का स्तर, इसके स्तर को गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं में तुलना करने पर जनजातीय सदस्यों की जानकारी का स्तर थोड़ा ठीक हैं।

जनवादी राजनीतिक व्यवस्था में नागरिक की राजनीतिक सहभागिता व्यवस्था के प्रभावशीलता की एक आवश्यक शर्त राजनीतिक सहभागिता है। मतदान प्रणाली, ऐच्छिक संस्थाओं तथा अन्य राजनीतिक संस्थाओं की सदस्यता या सहभागिता के द्वारा सामूहिक स्तर पर राजनीतिक व्यवस्था को शक्तिशाली बनाने में सहयोग प्राप्त होता है। माइकेल रश और फिलिप अल्थाफ ने राजनीतिक सहभागिता को राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न स्तरों में व्यक्ति की भागीदारी माना है। ग्राम सभा में सहभागिता की स्थिति के अवलोकन के सन्दर्भ में देखा जाए तो जनजातीय उत्तरदाता को गैर–जनजातीय उत्तरदाता की अपेक्षा ग्राम सभा के बारे मे अधिक जानकारी है। लगभग आधे जनजातीय उत्तरदाताओं को ग्राम सभा की बैठक की नियमित सूचना मिलती हैं। और उसमें अधिकांष उत्तरदाता ग्राम सभा कि बैठक में नियमित भाग लेते हैं। जनजातीय उत्तरदाताओं के मुकाबले ग्राम सभा कि बैठक कि सूचना गैर–जनजातीय सदस्यों को अधिक मिलती हैं। लेकिन उनकी सहभागिता की स्थिति जनजातीय के मुकाबले कम सर्वाधिक जनजातीय उत्तरदाताओ का मानना है कि सूचना के अभाव के कारण नियमित ग्राम सभा की बैठक में भाग नही लेते हैं जबकि गैर–जनजातीय उत्तरदाता का मानना है कि सूचना के अभाव एवं जाने से कोई लाभ नही है, खेती कार्यो में व्यस्तता के कारण ग्रामसभा कि बैठकों में नियमित भाग नही ले पाते हैं। ग्राम सभा की बैठक में भाग लेने वाले उत्तरदाताओं की सहभागिता की स्थिति ठीक है वे किसी न किसी रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं इनमें निर्माणाधीन कार्यो पर चर्चा, ग्राम की समस्याओं पर चर्चा एवं नई योजना की जानकारी प्राप्त करना प्रमुख हैं। बहुसंख्य जनजातीय उत्तरदाता, गैर–जनजातीय उत्तरदाता की अपेक्षा राजनीतिक में अधिक रूचि रखते हैं।

संदर्भ

आमण्ड, जी ए एण्ड पॉवेल, जी बी (1966), ***कम्पेरेटिव पॉलिटिक्सः ए डेवलपमेन्ट एप्रोच,*** लिटिल ब्राउन एण्ड कम्पनी, बोस्टन पृ. 27।

आमण्ड, जी ए एण्ड वर्बा, एस (1978), ***द सिविक कल्चर,*** प्रिन्सटिऑन यूनिवर्सिटी प्रिन्सटिऑन, पृ. 27।

अग्रवाल, सुरेश (2005), ***जनसंचार माध्यम,*** नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 12–15।

भाम्बरी, सी पी (1973), ***द अरबन वोटरः म्यूनिसिपल इलेक्शन इन राजस्थान. अ इम्पेरिकल स्टडी,*** नेशनल पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृ. 173–174।

चापी, एल (1971), पेरेन्टल ऑफ चिल्ड्रन न्यूज मीडिया, ***अमेरिकन बिहेवियर साइन्टिस्ट,*** पृ. 83।

डयूरॉल, आर ई एण्ड बीक,जे ए, (1977), ***ए पॉलिटिकल सोशलाईजेशन,*** नेल्सन, लंदन पृ. 202।

डॉसन, आर ई एण्ड हूज, जे ए (1969), ***पॉलिटिकल सोशलाईजेशन,*** लिटिल ब्राउन एण्ड कम्पनी, बोस्टन, पृ. 289, 17।

देसाई, एम बी (1977), ***कम्यूनिकेशन पॉलिसीज इन इंडिया,*** यूनेस्को प्रकाशन यूनेस्को, पृ. 18–19।

धर्मवीर, (2008), ***राजनीतिक समाजशास्त्र,*** राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

ईस्टन, डी एण्ड डेनिस, जे (1969), ***चिल्ड्रन इन द पॉलिटिकल सिस्टम,*** मेग्रोहिल, न्यूयार्क, पृ. 7।

ईस्टन, डेविड, (1986), दी थ्योरिटिकल रिलिवेन्स ऑफ पॉलिटिकल सोशलाईजेशन, ***जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस,*** पृ. 218।

गेना, सी बी (2008), ***तुलनात्मक राजनीतिक,*** विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नोएडा (यू. पी.)।

ग्रीनस्टीन, एफ आर (1968), पॉलिटिकल सोशलाईजेशन, *इंटरनेशनल* ***इनसायक्लोपीडिया ऑफ द सोशल साइंस,*** वाल्यूम 14., न्यूयार्क।

ग्रीनस्टेन, (1968), पॉलिटिकल सोशलाईजेशन, ***इंटरनेशनल इनसायक्लोपीडिया ऑफ द सोशल साइन्सेज,*** मेकमिलन एण्ड फ्री प्रेस, न्यूयार्क, पृ. 555।

हाइमन, एच एच (1959), ***पॉलिटिकल*** सोशलाईजेशन, फ्री प्रेस, पृ. 17।

कुप्पूस्वामी, बी (1976), ***कम्यूनिकेशन एण्ड सोशल डेवलपमेन्ट इन इंडिया,*** स्टर्लिंग पब्लिशर्स नई दिल्ली, पृ. 10–12।

लॉयड, सी एल (1967), ***कम्यूनिकेशन असेसमेन्ट एण्ड इण्टरवेंशन स्ट्रेटजीज,*** यूनिवर्सिटी पार्क प्रेस, लन्दन, पृ. 41।

लर्नर, डी (1958), ***द पॉसिंग ऑफ ट्रेडिशनल सोसायटी,*** नेल्सन पृ. 112।

मेथ्यूस, डी आर एण्ड प्रोथो, जे डब्ल्यू (1957), ***निग्रास एण्ड द न्यू साउथ पॉलिटिक्स,*** फ्री प्रेस, पृ. 37।

मैसियालस, बयीरोन जी (1969): ***एजूकेशन एण्ड दि पॉलिटिकल सिस्टम,*** एडीसन वैस्ले पब्लिशिंग कम्पनी, केलिफोर्निया पृ. 18–20।

मेहता, डी एस (1980), ***पब्लिक रिलेशन्स इन इंडिया,*** एलाइड पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 68।

मेट्रान, आर के (1968), ***सोशल थ्योरी एण्ड सोशल स्ट्रक्चर,*** फ्री प्रेस, न्यूयार्क पृ. 119।

पाई, लूसियन (1972), ***कम्यूनिकेशन एण्ड पॉलिटिकल डेवलपमेंट,*** राधाकृष्ण प्रकाशन, न्यू देहली, पृ. 4।

रश, एम एण्ड अल्थाफ, पी एन (1971), ***इन्ट्रोडक्शं टू पॉलिटिकल सोशलाईजेशन,*** नेल्सन लंदन, पृ. 160, 44।

रॉय, प्रशांत (1978), पॉलिटिकल सोशलाईजेशन, ***इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस,*** अप्रैल–जून पृ. 136–138।

स्टेबी, बी (1978), ***पॉलिटिकल सोशलाईजेशन इन वैस्टर्न सोसायटी,*** अर्नोल्ड–हीनमैन, न्यू देहली पृ. 2।

स्टेवर्ड, एल टी (1977), ***टब्स एण्ड सिल्विया मासः ह्यूमन कम्युनिकेशन सिस्टम,*** रेन्डम हाउस पब्लिकेशन, पृ. 9–10।

शर्मा, एस सी (1977), ***मीडिया कम्यूनिकेशन एण्ड डेवलपमेंट,*** रावत पब्लिकेशन, जयपुर पृ. 81।

शर्मा, कुमुद (1985), ***राजनैतिक समाजशास्त्र,*** श्री पब्लिशिंग हाउस अजमेरी गेट दिल्ली, पृ. 198–199।